विवाहके समय

राम और सीताकी आयु पर एक दृष्टि

[लेखक- आचार्य शिवपूजनसिंह कुशवाहा, 'पथिक' बी. ए., कानपुर]

पौराणिकोंका कथन है कि विवाहके समय श्रीरामकी आयु १६ वर्ष और सीताजीकी ६ वर्षकी थी।

पौराणिक पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र विद्यावारिधि लिखते हैं।

ऊनषोड्शवर्षो मे रामो राजीवलोचनः।
न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः॥
(बाल. स. २०, श्लो. २)

हे विश्वामित्रजी अभी रामचन्द्र सोलह वर्षसे भी कम हैं ये राक्षसोंसे युद्ध नहीं कर सकते, इसी समय रामचन्द्र उनके संग गए और यज्ञकी रक्षा कर धनुष तोड जानकी विवाही कहिये, यह विवाह कैसा हुआ। ●

समीक्षाः— मिश्रजीके दिए हुए प्रमाणसे यह कहां सिद्ध होता है कि श्रीरामजीका विवाह १५ वर्षमें हुआ।

महर्षि वाल्मीकी लिखते हैं कि।

पुत्रा दशरथस्येमे रूपयौवनशालिनः।
(बाल. सर्ग ७२, श्लो. ७)×

अर्थात्— ये दशरथके पुत्र रूप और यौवनसे युक्त हैं।'

यदि श्रीरामचन्द्रजीकी आयु १५ वर्षकी थी तो लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न इनसे भी छोटे होंगें और चारों भ्राताओंका विवाह जनकपुरीमें ही हुआ था।

दशरथजीके चारों पुत्रोंको 'यौवनशाली' कहा गया है फिर भी वे लोग अल्पवयस्क कैसे थे। 'यौवन' किस अवस्थाका नाम हैः— सुश्रुतके मतानुसार।

आपंचविंशतेर्यौवनम्। आषोडशाद् वृद्धिः।
(सूत्र स्थान अ. ३५)

अर्थात्— '१६ वें वर्ष तक वृद्धि अवस्था तथा २५ वें वर्षमें 'यौवन' होता है।

इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि श्रीरामचन्द्रजीका विवाह अल्पावस्थामें नहीं हुआ था। उपर्युक्त श्लोक वशिष्ठ और विश्वामित्रके वार्तालापमें है तो क्या वे दोनों अज्ञानी थे जो १५ वर्षमें 'यौवनशाली' कहते।

राम और लक्ष्मणको लेकर विश्वामित्रजी जनकपुरमें पहुंचे 'उस समय दोनों भ्राताओंके अनुपम रूप-लावण्य और सुसंगठित शरीरको देखकर राजा जनकने आश्चर्यके साथ मुनिसे पूछा—

पुनस्तं परिपप्रच्छ प्रांजलिः प्रयतो नृपः।
इमौ कुमारौ भद्रं ते देवतुल्यपराक्रमी॥ १७॥
गजतुल्यगती वीरौ शार्दूलवृषभोपमौ
अश्विनाविव रूपेण समुपस्थितयौवनौ॥ १८॥
यदृच्छयेव गां प्राप्तौ देवलोकादिवामरौ।
कथं पद्भ्यामिह प्राप्तौ किमर्थं कस्य वा मुने १९
(बाल. सां ५०)

अर्थात्— 'हे मुने! देवतुल्य पराक्रमी, सिंह तथा हाथीके सदृश चाल वाले, महान् पराक्रमी, सिंह और बड़े भारी मत्त बैलके समान, रूपसे अश्विनीकुमारोंके तुल्य, यौवनावस्थाको प्राप्त और अपनी इच्छासे देवलोकसे पृथ्वीपर

● दयानन्द तिमिर भास्कर पृष्ठ ८० संवत् १९६२ इ. में श्री वेंकटेश्वर स्टीम यन्त्रालय, बम्बईमें तीसरी बार मुद्रित व प्रकाशित।

× सन् १९४१ ई. में भारत मुद्रणालय औंधमें मुद्रित तथा स्वाध्याय मण्डल, आनन्दाश्रम पारडी, जि. सूरत (गुजरातराज्य) द्वारा प्राप्य, तुलना करो, कल्पतरु मन्त्रालय, बम्बईमें सन् १८८९ ई. में मुद्रित

आए देवताओंके तुल्य, ये दोनों कुमार किसके हैं। और हे मुने ! किसलिए यहां पर आए हुए हैं और कैसे पैदल आए हैं।'

यहां राजा जनक श्रीराम-लक्ष्मणको 'समुपस्थित यौवनौ' कहते हैं। उनकी यह उक्ति धनुष भंगके पूर्व की है।

इससे वे यौवन (तरुण) सिद्ध होते हैं।

संन्यासीके रूपमें जब रावण, सीताका हरण करने जाता है तब सीता संसार-त्यागी अतिथि, बात न करनेसे शायद क्रुद्ध होकर शाप दे देगा, इस आशंकासे अपना परिचय देती हुई कहती है कि—

ब्राह्मणश्चातिथिश्चैष अनुक्तो हि शपेत माम्।
इति ध्यात्वा मुहूर्तं तु सीता वचनमब्रवीत् ॥
दुहिता जनकस्याहं मैथिलस्य महात्मनः।
सीता नामास्मि भद्रं ते रामस्य महिषी प्रिया ॥
उषित्वा द्वादशसमा इक्ष्वाकूणां निवेशने।
भुंजाना मानुषान् भोगान् सर्वकामसमृद्धिनी ॥
मम भर्ता महातेजा वयसा पंचविंशकः।
अष्टादश हि वर्षाणि मम जन्मनि गण्यते ॥
(अरण्यकांड स. ४७, श्लोक २३, ४।१०)

अर्थात्— 'मैं मिथिलापति जनककी कन्या, श्री रामचन्द्रजीकी धर्मपत्नी सीता हूं। मैंने १२ वर्षतक इक्ष्वाकुवंशी श्रीरामके घरमें निवास कर मनुष्यमें उपर्युक्त सभी सुख भोग लिए है। अब मेरी कोई भी वासना शेष नहीं है। मेरे महातेजस्वी भर्तार श्रीरामकी अवस्था २५ वर्ष और मेरी १८ वर्षकी थी।'

इस वर्णनसे पता लगता है कि जब सीता वनमें आयी थीं उस समय उनकी अवस्था १८ वर्षकी थी, विवाहोपरान्त १२ वर्ष वह ससुरालमें रहीं, तब ६ वर्ष बच रहते हैं। क्या सीताजीकी अवस्था विवाहके समय ६ वर्षकी थी।

अरण्यकांडके उपर्युक्त श्लोक प्रक्षिप्त हैं, क्योंकि विवाहके समय सीताजी पूर्ण वयस्क पति- संयोगके अनुकूल, बुद्धिमति थीं। डा. शान्ति कुमार नानूराम व्यास एम्. ए., पी. एच्. डी., × श्री अनन्त सदाशिव अल्तेकर÷ और पादरी फादर कामिल बुल्के * एम्. ए., डी. फिल. तीनों ही इसे प्रक्षिप्त मानते हैं।

विश्वामित्र और जनकजीसे वार्तालाप होता है, उस समय जनकजी कहते हैं—

भूतलादुत्थितां तां तु वर्धमानां ममात्मजाम्।
(बाल. सर्ग ६६, श्लोक १५)

अर्थात्— 'इस प्रकार जब मेरी' ममात्मजा० (मेरी आत्मासे व मेरे शरीरसे उत्पन्न हुई) कन्या सीता 'वर्धमाना' प्राप्त यौवना + हुई।'

यहां मूल श्लोकमें 'वर्धमाना' शब्द है। वाल्मीकीय रामायणके टीकाकारोंमेंसे किसीने इसका अर्थ 'यौवनसम्पन्ना' तो किसीने प्राप्तयौवना' किया है।

इससे ज्ञात होता है कि विवाहके पूर्व सीताके शरीरमें यौवनका सूत्रपात हो गया था। अतः 'समुपस्थित यौवन' रामचन्द्रजीके साथ जब सीताजीका विवाह हुआ तब वह भी 'वर्धमाना' अर्थात् 'प्राप्तयौवना' थी।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नके साथ क्रमसे सीता, उर्मिला, मांडवी और श्रुतिकीर्तिका विवाह हो गया। सम्राट् दशरथ पुत्र और पुत्रवधुओंके साथ अयोध्या वापस आ गए। राजमहलमें महोत्सव हो रहा है। मांगलिक कार्योंके पश्चात्—

× 'रामायणकालीन समाज' प्रथम संस्करण पृष्ठ ११५

÷ 'पोजीशन आफ वीमेन इन हिन्दू सिविलिजेशन' पृष्ठ ६३

* 'रामकथा' प्रथम संस्करण, पृष्ठ २८८

० 'ममात्मजां' शब्दपर टिप्पणी, आचार्य रामदेवजी बी. ए. कृत 'भारतवर्षका इतिहास'

+ डॉ० शान्ति कुमार नानूराम व्यास भी 'प्राप्तयौवना' (रामायणकालीन समाज, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ११५) अर्थ करते हैं — लेखक।

रेमिरे मुदिताः सर्वाः भर्तृभिः सहिता रहः ।
कुमाराश्च महात्मानो वीर्येण प्रतिमा भुवि ॥
(बालकांड, सर्ग ७७, श्लोक १४)

अर्थात्— 'सब मुदित हुईं (राजपुत्रियों) ने एकान्तमें अपने पतियोंके साथ रमण किया। (इसी प्रकार) संसारमें पराक्रममें अप्रतिम महात्मा राजकुमारोंने भी रमण किया।'

मूल श्लोकमें 'रेमिरे' शब्द है, इसका अर्थ 'रमण करना' होता है। इससे सीता आदि चारों बहिनोंकी आयुका सहज ही अनुमान किया जा सकता है। राम, लक्ष्मण तो थे ही 'प्राप्त यौवन'

पौराणिकोंके कथनानुसार ६ वर्षकी कन्याके साथ रमण कैसे किया जा सकता है। यह तो असंभव है।

सीताने अत्रि ऋषिकी स्त्री अनुसूयासे कहा—

पतिसंयोगसुलभं वयो वीक्ष्य पिता मम।
चिन्तामभ्यगमद्दीनो वित्तनाशादिवाधनः ॥
(अयोध्या कां. सर्ग ११८, श्लो. ३४)

अर्थात्— 'पिताने जब मेरी 'पति संयोग सुलभ' अवस्था देखी तो उनको बड़ी चिन्ता हुई।' जैसे दरिद्रको धननाश होनेपर विषाद होता है मेरे पिताको भी वैसा ही हुआ।'

इस श्लोकमें 'पति संयोग सुलभ' शब्द आता है, किसी किसी टीकाकारने इस पदकी व्याख्यामें 'विवाह योग्य वयस्य' लिखा है। इसका अर्थ होगा 'पतिसे संयोगके लिए सुलभ'। विवाहके पूर्व सीताजीके लिए यह शब्द प्रयुक्त हुआ है और विवाहके बाद ही 'रेमिरे' शब्द आया है। अतएव इसका अर्थ सहज ही यह होता है कि 'वर्धमाना पत्नीके साथ 'प्राप्त यौवन' पतिका मिलाप हुआ।

'अध्यात्म रामायणके आदि कांडके ६ ठे अध्यायमें कहा है कि 'मिथिलाकी राजसभामें श्री रामचन्द्रजीने हंसते हुए शिव धनुषको तोड डाला। राजा जनक अपने सारे रनवासके सहित आनन्दसे विह्वल हो गए। सीता, सोनेकी माला हाथमें लिए मुस्कुराती हुई धीरे धीरे रामके समीप आयी और उनके गलेमें माला पहनाकर वह नितान्त प्रेम सागरमें डूब गई। मूल वर्णनका चमत्कार देखिए—

सीता स्वर्णमयीं मालां गृहीत्वा दक्षिणे करे।
स्मितवक्त्रा स्वर्णवर्णा सर्वाभरणभूषिता ॥
मुक्ताहारैः कर्णपत्रैः क्वणच्चलित नूपुराः।
दुकूलपरिसंवीता वस्त्रान्तः व्यंजितस्तनी ॥
रामस्योपरि निक्षिप्य स्मयमाना मुदं ययौ।

यह 'स्मितवक्त्रा' और 'स्मयमाना मुदं ययौ' इन दोनों विशेषणोंसे सीताकी विवाह कालीन अवस्थाका पर्याप्त आभास मिलता है। छः वर्षकी बालिकाके लिए ऐसी उक्तियां कभी नहीं कही जा सकतीं। 'वस्त्रान्तः व्यंजितस्तनी' विशेषणसे स्पष्ट प्रकट होता है कि विवाहके समय सीता 'प्राप्त यौवना' थी और उसकी अवस्था महर्षि वाल्मीकिके कथनानुसार 'पति संयोग सुलभ' हो चुकी थी। इन प्रसंगको पढकर कोई संस्कृतज्ञ यह कह सकता कि सीताकी अवस्था छः वर्षकी थी ?

जनकपुरीसे वापस आनेपर राजमहलमें विशेष धूमधाम है। सबके साथ मिलने जुलनेके बाद चारों भाई—

रामलक्ष्मणशत्रुघ्नभरता देवसम्मिताः।
स्वां स्वां भार्यामुपादाय रेमिरे स्वस्व मन्दिरे ॥
मातृपितृभ्यां संहृष्टो रामः सीतासमन्वितः।
रेमे वैकुंठ सवने श्रिया सह यथा हरिः ॥
(अध्यात्मरामायण १।७।५२–५४)

अर्थात्— 'देव प्रतिम राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न अपने अपने महलोंमें अपनी अपनी भार्याओंके साथ आमोद प्रमोद करने लगे। जैसे वैकुंठमें लक्ष्मीके साथ विष्णुका समय सुखपूर्वक व्यतीत होता है वैसे ही माता पिताके आदरसे श्री राम सीताका समय भी बडे आनन्दसे व्यतीत होने लगा।'

जिस प्रकार वाल्मीकि ऋषिने 'पति संयोग सुलभ वय' व 'रेमिरे मुदिता रहः' का प्रयोग किया है उसी प्रकार अध्यात्म रामायणमें भी 'वस्त्रान्तर व्यंजितस्तनी' और 'रेमिरे' का व्यवहार किया है।

अतः सीताकी आयु विवाहके समय छः वर्षकी कदापि नहीं हो सकती।